पाठ 11. गालिब की डायरी का पन्ना

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को उर्दू के शायर मिर्ज़ा गालिब के बारे में जानकारी देना और आज़ादी की लड़ाई में अंग्रेज़ों द्वारा भारतीयों पर किए गए अत्याचारों से अवगत कराना है। इस पाठ में पुरानी दिल्ली की झलक भी देखने को मिलती है।

पाठ का सारांश

मिर्ज़ा असद-उल्लाह खाँ गालिब उर्दू के शायर थे। वे दिल्ली में रहते थे। सन् 1857 की आज़ादी की लड़ाई के दिनों में अंग्रेज़ों ने हज़ारों लोगों को मार दिया था। अंग्रेज़ों के अत्याचारों का तथा उन दिनों दिल्ली के हाल का उल्लेख उन्होंने अपनी डायरी 'दस्तंबू' में लिखा है। अंग्रेज़ों के डर से लोगों ने उस गली का रास्ता पत्थरों से बंद कर दिया था जिस गली में मिर्ज़ा गालिब रहते थे। वहाँ कोई कुआँ नहीं था। पीने के पानी की कमी के कारण लोगों को शोरे का पानी पीना पड़ा। 5 अक्तूबर, 1857 को अंग्रेज़ अफसर ब्राउन ने मिर्ज़ा गालिब के साथ उनके कुछ पड़ोसियों को भी गिरफ़्तार कर लिया। कवि होने की वजह से उसने उन्हें छोड़ दिया। लोगों के भूखे मरने की नौबत आ गई थी। कैदखानों के बंदियों को फाँसी दे दी गई। लाखों लोग मार दिए गए थे। एक दिन मिर्ज़ा गालिब के बीमार होने पर उनके पड़ोसी के बेटे ने हकीम बुलाकर उनकी जान बचाई। दूर के दोस्तों में से एक ने मेरठ से गेहूँ की कुछ बोरियाँ और नगद रुपए भेजे। अंग्रेज़ों ने मकानों के मालिकों को तथा उनके दोस्तों को एक-एक करके मार दिया।

अध्यापन संकेत

पाठ का आदर्श वाचन करें तथा बच्चों से पाठ का एक-एक अंश पढ़वाएँ। उन्हें 1857 की क्रांति और उस समय की भारत की स्थिति से अवगत कराएँ। उस क्रांति के महानायकों के बारे में संक्षेप में बताएँ।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें–

- बच्चों से पूछें, 1857 की क्रांति के बारे में वे क्या जानते हैं?
- पानी का हमारे जीवन में कितना महत्त्व है? पाठ के आधार पर बताएँ।
- मिर्ज़ा गालिब ने गरीब मेहरुन्निसा और उसकी दोनों बेटियों के लिए रोटियाँ भिजवाईं। इससे उनके व्यक्तित्व के किन गुणों का पता चलता है?
- 'सच्चा मित्र वही है जो मुश्किल समय में साथ दे।' पाठ के आधार पर इस कथन को स्पष्ट करें।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।